International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(II), January - March, 2024, pp. 153-156

पंडिता रमाबाई : जीवन एवं दर्शन

चैनाराम मुंदलिया*

सार

पंडिता रमाबाई उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी के संधिकाल की प्रतिष्ठित भारतीय समाज सुधारक एवं सामाजिक कायकर्ता थी, जिसे भारतीय परिवेश में प्रथम नारीवादी चिंतक के तौर पर देखा जाता है। उस समय की परम्पराओं एवं बाह्य आडम्बरों का विरोध कर अन्तर्जातीय एवं अन्तरक्षेत्रीय विवाह किया और महिलाओं के उत्थान के लिए उन्होंने भारत के साथ –साथ विदेश यात्रा भी की थी। इस हेतु रमाबाई ने आर्य महिला समाज तथा शारदा सदन आदि संस्थागत प्रयास किये वहीं उन्हें संस्कृत भाषा में विद्वत्ता एवं महिलाओं के उत्थान हेतु कार्यो से सरस्वती तथा पंडिता की उपाधि से नवाजा गया था। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य आधुनिक भारत की एक अनुकरणीय महिला और समाज सुधारक पंडिता रमाबाई के जीवन, दर्शन और कार्यों का विवेचन करना है।

शब्दकोशः *रमाबाई, पंडिता, सरस्वती, नारीवाद, पितृसत्तात्मक, शारदा सदन, मुक्ति सदन, लैंगिक समानता।*

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतक की श्रृंखला में पंडिता रमाबाई का महत्वपूर्ण स्थान है। पंडिता रमाबाई समाज सुधारक एवं प्रथम भारतीय नारीवादी विचारक, कवि व अध्येता थी। रमाबाई का जन्म 23 अप्रैल 1858 को मैसुर रियासत (वर्तमान में कर्नाटक राज्य का करकल– पश्चिम घाट के गंगामूल के गहरे जंगल) में एक बहुत ही प्रगतिशील एवं उदार ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता अनंत शास्त्री डोंगरे एक गैर परम्परावादी ब्राह्मण थे, जिन्होंने कठोर हिंदू सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देते हुए अपनी पत्नी को संस्कृत पढ़ाया जो कि उस समय में एक अपरंपरागत कार्य था। पंडिता रमाबाई को भी पिता ने उस जमाने की परम्पराओं से किनारा कर संस्कृत भाषा एवं हिंदू धर्म के पवित्र ग्रन्थों से प्रशिक्षित किया। 12 वर्ष की आयु में उन्होंने भागवत पुराण के अठारह हजार श्लोक सीख लिए थे। उनके पिता ने पुराणों के छंदो का पाठ किया और उनका परिवार पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में एक विस्तारित तीर्थयात्रा पर गया। इस तपस्वी भटकने वाले अस्तिव ने पारिवारिक कठिनाइयों और भूखमरी को जन्म दिया। जिससे अकाल के दौरान उनके स्वास्थ्य को प्रभावित किया। उनके माता–पिता की अकाल मृत्यु के बाद भी गरीबी, तीर्थयात्रा और दुर्दशा का जीवन जारी रहा,

* सह आचार्य–राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय बाँगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डीडवाना, राजस्थान।

क्योंकि ये भ्रमण रमाबाई और उसके भाई श्रीनिवास के लिए जारी रहा था। 1878 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के द्वारा रमाबाई को संस्कृत के ज्ञान के लिए **सरस्वती,** तथा थियोसोफिकल सोसायटी के केशवचन्द्र सेन ने (रमाबाई ने केशवचंद्र सेन को अपना गुरू माना था) **पंडिता** जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया। 1882 में हंटर कमीशन के समक्ष नारी शिक्षा एवं स्वास्थ्य की बात रखी। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए रमाबाई 1883 में इंग्लैण्ड गई जहां उन्होंने हिंदू धर्म के विकल्प के रूप में ईसाई धर्म को स्वीकारा और अपना नाम मैरी रमा रखा, परन्तु महिलाओं पर बंधन को एवं पुरुषवादी निर्देशन को इस धर्म में भी रमाबाई ने नहीं स्वीकारा था यानी धर्म बदला परन्तु धार्मिक बंधन स्वीकार करने को रमाबाई कभी भी तैयार नहीं थी। 1886 में रमाबाई अमेरिका गयी और बोस्टन में रमाबाई एसोसियशन की स्थापना की जिसमें एकत्र धन से भारत में महिलाओं की मुक्ति के संचालित शारदा सदन का अगले 10 वर्ष तक खर्चा चलाया जा सके। 1889 में अमेरिका से भारत आयी और पूणे में 20 विधवाओं के साथ शारदा आश्रम आरम्भ किया, परन्तु तिलक के समाचार पत्र **केसरी** में इसका विरोध भी किया गया। रमाबाई ने महिलाओं एवं बच्चों के मुक्ति मिशन भी चलाया। इन सबके उद्देश्य महिलाओं को पुरुषवादी विचारधारा से मुक्त बनाकर आर्थिक रूप से स्वालम्बी बनाना था। 1919 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें **केसर ए हिंद** की उपाधी दी। पंडिता रमाबाई की मृत्यु 5 अप्रैल, 1922 को महाराष्ट्र में हुई। 1989 में भारत सरकार ने रमाबाई की याद एवं महिला समाज सुधारक के उनके प्रयासों को दर्शाते हुए स्मारक डाक टिकट जारी किया।

पंडिता रमाबाई द्वारा लिखित महत्वपूर्ण रचनाएं

- स्त्री धर्मनीति, 1882 (मराठी में लिखित रचना)
- द क्राई ऑफ इंडियन वूमेन 1883 (मराठी में लिखित। भारतीय स्थितियों की दीन हीन स्थिति का चित्रण है।)
- वायेज टू इंग्लैण्ड, 1883
- दी हाई कास्ट हिंदू विमेन, 1887 (महत्वपूर्ण रचना जिसमें उच्च हिंदू महिलाओं की स्थिति का वर्णन है।)
- पीपल्स ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स, 1888
- द कंडीशन ऑफ द वूमेन इन यूएसए,1889
- फेमाइन एक्सपीरियंस इन इंडिया, 1890
- द टेस्टीमनी ऑफ अवर इन एक्सास्टिबल ट्रेजर, 1917
- मुक्ति प्रेयर बिल, 1903
- द न्यू टेस्टामेंट, 1924
- द लाइफ ऑफ द क्राइस्ट, 1924
- हिस्ट्री ऑफ ब्रह्मा समाज
- अर्ली लाइफ स्टोरी एंड ट्रैवल्स इन इंडिया
- राइज एंड फॉल ऑफ द आर्यन मैन

नारीवादी चिंतन में रमाबाई का योगदान

रमाबाई जो एक संस्कृत विदूषी थी, पंडिता एवं सरस्वती के नाम से सम्मानित, अनुलोम विवाह करके अपने पैतृक धर्म के खिलाफ आवाज बुलंद कर बहादुरी से ईसाई धर्म को अपना लिया। उन्होंने अपने बचपन के अनुभव एवं यात्रा के दौरान भारतीय समाज में महिलाओं पर लगाए गये अक्षम और विभेदकारी प्रतिबंधो को देखा। रमाबाई ने हिंदू धर्म में पाई जाने वाली लिंग विशिष्ट सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एवं कुप्रथाओं के

खिलाफ एक अदम्य योद्वा के रूप में कार्य करते हुए महिलाओं की दयनीय परिस्थितयों को सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की। निसन्देह वह भारत की प्रथम नारीवादी विचारक थी जिसने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए अनेक कार्य किये, रमाबाई ने वैदिक हिंदू परम्परा का समर्थन किया जिसमें पुरुष एवं महिलाओं को समानता का दर्जा प्राप्त था। परन्तु उन्नीसवीं सदी के रूढीवादी हिंदू सामाजिक व्यवस्था में बाल विवाह एवं घरेलू हिंसा का विरोध करते हुए 1882 में अपनी पुस्तक **'द क्राई ऑफ इंडियन वूमन'** मराठी भाषा में लिखी जिसमें महिलाओं की दयनीय स्थिति पर विस्तार से चर्चा करते हुए उसमें सुधार के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख है जिसमें 1882 में पूणे में महिला शिक्षा एवं बाल विवाह के रोकथाम हेतु **आर्य महिला समाज** का गठन किया जिसमें ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य किये गए। इसी वर्ष मराठी में **स्त्री–धर्म नीति** (नारी का नैतिक) लिखी गयी जो कि नारीवादी विचार एवं प्रवचन में उनका प्रथम योगदान थी। 1887 में अमेरिका प्रवास के दौरान बोस्टन में रमाबाई एसोसिएशन का गठन किया।

स्त्री मुक्ति के तीन आधार

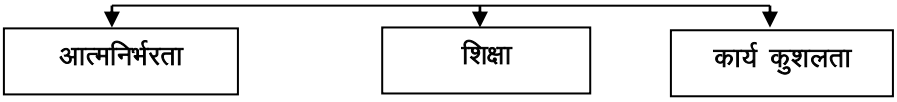

1887 में अग्रेजी में पहली पुस्तक **द हाई कास्ट हिंदू वूमन** भी लिखी जिसे भारतीय नारीवादी घोषणा पत्र माना जाता है क्योंकि यह रूढीवादी शास्त्रों और कर्मकाण्डों द्वारा भारतीय महिलाओं की अमानवीय स्थितियों की तीखी आलोचना करती है। रमाबाई ने शारदा सदन, और कृपा सदन आश्रम बनाए, जिसमें अनाथ एवं पीड़ित महिलाओं एवं बच्चों को इस प्रकार शिक्षित किया गया कि वे स्वयं अपना जीविकोपार्जन कर सकें। बेघर बच्चों एवं समाज से ठुकराई गयी महिलाओं के लिए रमाबाई में मुक्ति मिशन आरम्भ किया जो इनके लिए एक घर बना गया और आगे बढने में ऐसे वर्ग को मदद मिली। इस प्रकार पंडिता रमाबाई परतंत्र भारत में एक मात्र ऐसी नारीवादी चिंतक थी जो नारी अस्मिता की पहल में जीवन भर लगी रही। उन्होंने महिला अधिकार एवं उसकी शिक्षा तथा जीविकोपार्जन के लिए स्वरोजगार हेतु कार्य किया। इन कार्यों का समाज पर सकारात्मक असर भी सामने आया, जिसे भूलाया नहीं जा सकता। रमाबाई ने महिलाओं को पिछड़ी व कमजोर स्थिति से उबारने के लिए समर्पित होकर कार्य किये।

सारांश

पंडिता रमाबाई को अपने समय के पुरुष समाज सुधारकों के समकक्ष एक अकेली और क्रांतिकारी महिला समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है। उन्होंने व्यावहारिक रूप से भारतीय नारीवादी आंदोलन की नींव रखी। उनका पूरा प्रक्षेप पथ मौलिक सामाजिक परिस्थितियों और रूढीवादी परिस्थितयों को देखते हुए अत्यधिक चुनौतियों से भरा था जिसमें वह काम कर रही थी। फिर भी उन्होंने जो विकल्प चुने और जिन संभावनाओं के साथ उन्होंने प्रयोग किया वे उन हठधर्मिता और रूढिवाद से उनके कट्टरपंथी प्रस्थान को दर्शाते है, जिसने न केवल हिंदू धार्मिक व्यवस्था को, बल्कि ईसाई धर्म को भी प्रभावित किया। उन्होंने मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक, धार्मिक और सामाजिक विचारों और प्रथाओं को बदनाम करने के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जिसने महिलाओं को अधीन किया और असमान व्यवहार का सामना किया। रमाबाई अपने आस–पास के विवादों और उनके द्वारा चुने गए अपरंपरागत पथ के कारण इतिहास में अस्पष्ट बनी हुई है। हालांकि रमाबाई जैसे असाधारण, बौद्धिक, सहज दिमाग के वैचारिक और संस्थागत योगदान पर ध्यान न देना समकालीन समाज के लिए एक बड़ी भूल होगी। पंडिता रमाबाई के विचार परतंत्र भारत में स्वतंत्र विचार की नींव रखता है, और इसी कारण वश उन्हें आयरन लेडी की संज्ञा प्रदान की गयी है। प्रो. टोनी ने रमाबाई को शिक्षा की दैवी सरस्वती करी संज्ञा दी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एंडरसन, ए (2006) पंडिता रमाबाई, द मुक्ति रीवाईवल एंड ग्लोबल पेंटेकोस्टलिज्म ट्रांसफारफेशन 23 (1) 37–48
2. बर्टन, ए. 1995 कोलोनियल एंनकांउटरस इन लेट विक्टोरियन इंग्लैंड पंडिता रमाबाई एंट चेल्टनहेम एंड वेंटेज 1883–86 फेमिनिस्ट रिव्यू 49 (1) 29–49
3. चक्रवर्ती, बी. एंड पांडे, आर. के. (2009) मार्डन इंडियन पॉलिटिकल थॉट : टैक्स एंड कंटेकस्ट, सेज
4. सिंह, एम. पी. एंड रॉय एच (2011) इंडियन पॉलिटिकल थॉट थीम एंड थिंकर्स, पिर्यसन एज्यूकेशन इंडिया।
5. रमाबाई पी. (1977) लेटरल एंड कोर्सपोन्डेन्स ऑफ पंडिता रमाबाई एडिटिड बाई ए. बी. शाह बॉम्बे महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड फॉर लिटरेचर एंड कल्चर।
6. कोसंबी एम. (1992) इंडियन रिस्पांस टू क्रिसटिएनिटि चर्च एंड कोलोनिएलिज्म केश ऑफ पंडिता रमाबाई ईपीडब्लू
7. कोसंबी एम. (2004) ट्रेसिंग द वाईस पंडिता रमाबाईज लाइफ थ्रू हर टेक्टस आस्ट्रेलियन फेमिनिस्ट रिव्यू।

❖◆❖